विचार बिन्दु

सहकामी दीपक दसा, सोखे तेल निवास
कबीरा हीरा संतजन, सहजे सदा प्रकास –कबीर

कहीं कम मतदान इस कारण तो नहीं?

अठारहवीं लोक सभा के चुनाव की प्रक्रिया ज़ारी है। 4 जून को पता चल जाएगा कि अगले पांच बरस कौन व्यक्ति, दल या दल समूह इस देश की रीति-नीतियों का निर्धारण करने वाला/वाले हैं! मैं जान-बूझकर और सोच-समझकर राज करेगा, राजगद्दी पर कौन बैठेगा जैसी शब्दावली का प्रयोग नहीं कर रहा हूं। हमारे यहां लोकतंत्र है, हममें से हरेक के पास यह अधिकार है कि हम अपना जन प्रतिनिधि चुनें, और हममें से बहुत सारे लोग इस अधिकार का सहर्ष प्रयोग कर रहे हैं। मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि जबसे मुझे मताधिकार प्राप्त हुआ है, मैंने अपने इस अधिकार के प्रयोग का कोई मौका नहीं छोड़ा है। नगरपालिका से लगाकर संसद तक के चुनावों में मैंने मतदान किया है। इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता है कि आप जिसे अपना वोट देते हैं वह जीतता है या नहीं जीतता है। बहुत बार हवा किसी एक ख़ास प्रत्याशी के पक्ष में होती है और उसके समर्थक बहुत सोच-समझ कर यह माहौल बनाते हैं कि अगर हमने उसे छोड़ किसी और के पक्ष में मतदान किया, तो हमारा वोट बेकार जाएगा। समझने की बात यह होती है कि दिया हुआ वोट कभी भी बेकार नहीं जाता है। बेकार वह तब जाता है जब आप मतदान वाले दिन घर से नहीं निकलते हैं। ऐसा इस दफ़ा कुछ ज़्यादा देखने में आ रहा है। मीडिया और चुनाव विशेषज्ञ बार-बार यह बात कह रहे हैं कि इस बार मतदाता उदासीन है और मतदान प्रतिशत पहले की तुलना में कम है। यह विश्लेषण भी किए जा रहे हैं कि कम मतदान का नुकसान किसे होगा और इससे फायदा किसको होगा। हमारा निर्वाचन आयोग तो मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है ही, विभिन्न राजनीतिक दल भी अपने कार्यकर्ताओं को अधिक सक्रिय कर रहे हैं ताकि वे मतदाताओं को मतदान केंद्रों तक ला सकें।

1950 से हमारे देश में चुनाव हो रहे हैं। इन वर्षों में बहुत कुछ बदला है। जहां निर्वाचन आयोग ने विभिन्न जतन करके इन चुनावों को निष्पक्ष, निर्विवाद और पारदर्शी बनाने के अनेक प्रयास किए हैं, वहीं समय के साथ-साथ हमारी चुनाव प्रक्रिया में बहुत सारी विकृतियां भी आई हैं। विकृतियों का आना अस्वाभाविक नहीं माना जाना चाहिए। ज़रूरत इस बात की है कि हम उनके प्रति सजग हों और उन्हें दूर करनेके लिए ईमानदारी से प्रयत्नशील हों। यह दायित्व निर्वाचन आयोग का जितना है उतना ही राजनीतिक दलों का भी है। लेकिन यह मान लेना कि हमारा अर्थात आम मतदाता का कोई दायित्व है ही नहीं, बहुत ग़लत होगा। दुर्भाग्य से आज़ादी के बाद से जो माहौल बना है उसमें हम अपना दायित्व भी दूसरों की तरफ खिसका कर स्वयं को सारे दायित्वों से मुक्त मानने के अभ्यस्त होते गए हैं।

हमने अपने देश के लिए जो व्यवस्था चुनी है उसके अनुसार हम अपने प्रतिनिधि (इस चुनाव में सांसद) चुनने के लिए मतदान करते हैं, हमारे द्वारा चुने गए सांसद अपने-अपने दल के नेता का चुनाव करते हैं और उन दलों में जिस दल के पास सर्वाधिक सांसद होते हैं, उसके नेता को राष्ट्रपति प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के लिए आमंत्रित करते हैं। यह सामान्य प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में समयानुसार थोड़े-बहुत बदलाव होते रहते हैं। उदाहरणार्थ इस बार एक बड़े दल ने पहले से अपना नेता चुन रखा है और न केवल चुन रखा है, वह पूरा का पूरा चुनाव ही उस नेता के नाम और छवि पर लड़ रहा है। इस दल ने अपने निर्वाचित होने वाले सांसदों द्वारा किया जाने वाला काम -अपने नेता का चुनाव- पहले से करके उन्हें उस काम के बोझ से आज़ाद कर दिया है। कहा जा सकता है कि यह उस दल विशेष का अंदरूनी मामला है। यह भी कम रोचक बात नहीं है कि पिछले कुछ समय से देश में चुनाव जीतने की बात करने के साथ-साथ एक दल विशेष को पूरी तरह नेस्त-नाबूद करने की, उस दल-विहीन भारत बनाने की बात की जाती रही है। हमारे लोकतंत्र के लिए यह नई बात थी। आप विजयी हों, यह आपका अधिकार है, लेकिन आप दूसरों को दृश्य से ही गायब कर देना चाहें, यह बात तो प्रजातंत्र की भावना के अनुरूप नहीं है। इसी तरह इस बार विजयी होने और सरकार बनाने की बात से आगे बढ़कर एक ऐसे बहुमत की आकांक्षा को हवा दी जा रही है जो विपक्ष को पूरी तरह अप्रासंगिक कर सकता है। सच्चा प्रजातंत्र तो वही होता है जिसमें प्रतिपक्ष सत्ता पक्ष पर उपयुक्त नियंत्रण रखे। अब सारा ज़ोर प्रतिपक्ष को ख़त्म करने पर है, और ऐसा करने के लिए हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। यह बहुत दुखद है। दुखद भी और दुर्भाग्यपूर्ण भी।

इस बार विजयी होने और सरकार बनाने की बात से आगे बढ़कर एक ऐसे बहुमत की आकांक्षा को हवा दी जा रही है जो विपक्ष को पूरी तरह अप्रासंगिक कर सकता है। सच्चा प्रजातंत्र तो वही होता है जिसमें प्रतिपक्ष सत्ता पक्ष पर उपयुक्त नियंत्रण रखे। अब सारा ज़ोर प्रतिपक्ष को ख़त्म करने पर है, और ऐसा करने के लिए हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। यह बहुत दुखद है। दुखद भी और दुर्भाग्यपूर्ण भी।

हमने यहां प्रजातंत्र की जिस शैली को अंगीकार किया है उसमें बहु दलीय व्यवस्था होती है। हर दल चुनाव से पहले अपना एक घोषणा पत्र ज़ारी करता है और सामान्यतः मतदाता उसी घोषणा पत्र पर विचार करके मतदान करता है। कभी-कभी कहीं कोई प्रत्याशी इतना सशक्त होता है कि मतदाता उसकी निजी छवि से प्रभावित होकर बिना उसकी दलीय संलग्नता पर विचार किए, उसके पक्ष में मतदान कर देता है। ऐसे निर्दलीय प्रत्याशी के लिए सारे दलों के दरवाज़े भी खुले रहते हैं, लेकिन यह नैतिकता का तकाज़ा होता है कि वह उस दल में शामिल न हो, जो उसकी घोषित रीति नीतियों से भिन्न रीति नीति रखता हो। लेकिन इधर यह आदर्श लुप्त होता जा रहा है। अब तो हालत यह हो गई है कि एक व्यक्ति जो बरसों बरस किसी दल विशेष का सक्रिय सदस्य रहा, अचानक पलटी खाकर उस दल में शामिल हो जाता है जिसे वह पानी पी-पीकर कोसा करता था। यह समझना लगभग नामुमकिन होता है कि कुछ देर पहले तक जो दल आपके हिसाब से भयंकर खराब था, अचानक वह बहुत खूबसूरत कैसे हो गया? और बात केवल उस प्रत्याशी की ही नहीं है। इससे भी ज़्यादा बेशर्मी तो वह दल दिखाता है जिसमें ये शामिल होते हैं। मिर्ज़ा ग़ालिब याद आते हैं – कितने शीरीं हैं तेरे लब कि रक़ीब/ गालियां खाके बेमज़ा न हुआ। थोड़ी देर पहले तक जो प्रत्याशी इस दल को जी भर-भर के गालियां दे रहा था, वही दल जब ऐसे प्रत्याशी को अपना उम्मीदवार घोषित कर देता है तो आश्चर्य से अधिक क्रोध का अनुभव होता है। क्या स्वार्थ सर्वोपरि है? सिद्धांत, आदर्श, नैतिकता ये सब खोटे सिक्के हो चले हैं?

राजनीतिक दलों और उनके प्रत्याशियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने चुनावी भाषणों में अपनी रीति-नीतियों की बात करेंगे। अगर कोई दल सत्ता में है तो उसके प्रत्याशी यह बताएंगे कि उन्होंने अब तक क्या किया है और आगे क्या करने जा रहे हैं! जो दल अभी तक विपक्ष मंर हैं, जो सत्ता पर काबिज़ नहीं हो सके हैं, उनसे यह उम्मीद की जाती है कि वे सत्तापक्ष की असफलताओं को उजागर करते हुए यह बताएंगे कि अगर वे सत्ता में आ गए तो क्या-क्या करेंगे! बात चाहे वर्तमान सत्तासीन लोग करें या वे जो सत्ता में आने के सपने देख रहे हैं, उनकी बात तथ्यपूर्ण, तर्क आधारित और व्यावहारिक होनी चाहिए। इनमें लफ्फाज़ी कम से कम हो और व्यक्तिगत आक्षेप तो हों ही नहीं। लेकिन इन दिनों जैसे इन सब बातों को कचरे के ढेर में फेंक दिया गया है। जो सत्ता में हैं वे अपनी पूरी ताकत उनको खराब बताने में कर रहे हैं जो सत्ता से दूर हैं। वे उनसे जवाब तलब कर रहे हैं, उन पर झूठे आरोप लगा रहे हैं। और जो सत्ता में नहीं हैं, वे भी बजाय यह बताने के कि अगर वे सत्ता में आ गए तो क्या काम करेंगे और कैसे करेंगे, सत्तारूढ़ दल द्वारा लगाए गए मिथ्या आरोपों पर अपनी सफाई देने या कुछ-कुछ वैसी ही हरकत करने में अपनी पूरी ताकत झोंक रहे हैं।

एक मतदाता के रूप में, एक नागरिक के रूप में मैं बड़ी उलझन में हूं। जो लोग विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा मुझ तक अपनी बात पहुंचा रहे हैं, मैं उनमें से किसी को भी अपनी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा नहीं पा रहा हूं। मुझे समझ में ही नहीं आ रहा है कि सत्ता में आ जाने के बाद ये क्या-क्या काम करने वाले हैं। वे बता ही नहीं रहे हैं। उन्होंने मान लिया है कि मैं, अर्थात उनका मतदाता, निहायत ही मूर्ख हूं। मेरा अपना कोई विवेक नहीं है। वे जो चाहें और जैसे चाहें कह सकते हैं। कह रहे हैं। उन्होंने झूठ और सच के बीच अंतर करना छोड़ दिया है। अपने बीते कल के वादे को झुठलाने में उन्हें तनिक भी शर्म नहीं है और आज तो वे कोई वादा भी नहीं कर रहे हैं। वे तो बस, मुझे यह बता रहे हैं कि उनके सामने जो खड़ा है वह कितना बुरा है, जबकि मैं यह जानना चाहता हूं कि वे यह बताएं कि वे ख़ुद कितने अच्छे हैं! जो वे बता नहीं रहे हैं!

कहीं घटते मतदान प्रतिशत के मूल में एक बात यह भी तो नहीं है?

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राष्ट्रीय प्रसन्नता क्या है और इसे कैसे पाया जा सकता है?

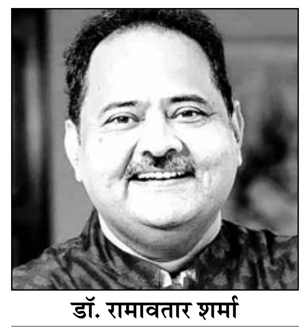

डॉ. रामावतार शर्मा

प्रसन्नता एक व्यक्तिगत अनुभव है। इसे राष्ट्रीय स्तर पर परिभाषित करना कोई आसान कार्य नहीं है और राष्ट्रीय प्रसन्नता का मूल्यांकन करना तो और भी अधिक कठिन कार्य है क्योंकि यह कोई वस्तु नहीं है जिसका माप तौल किया जा सके। यहां यह मूल्यांकन करने वाले लोगों का अपना भावनात्मक एवम विश्लेषण करने वाला निर्णय होता है। इस कठिन कार्य को संयुक्त राष्ट्र संघ एक संस्था द्वारा वैश्विक स्तर पर करवाता रहता है। इस संस्था का नाम सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस (दीर्घकालिक विकास समाधान) है। संस्था ने राष्ट्रीय प्रसन्नता के लिए कुछ कसौटियां तय की हैं जिन पर देशों को खरा उतरना होता है। प्रसन्नता का मतलब यहां पर हंसी-ठिठोली नहीं है बल्कि प्रशासनिक ढांचे में लोग अपना जीवन कितनी आसानी से जी पाते हैं तथा राष्ट्रीय विकास और संपदा में उनकी मेहनत का कितना पारिश्रमिक मिलता है इन बातों का ध्यान रखा जाता है। इस सब पैमानों पर भारत किस स्थिति में है यह जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। भारत में एक स्थिति काफी जटिल हो चली है कि आम आदमी सोशल मीडिया द्वारा गलत सूचनाओं एवम अर्धज्ञान द्वारा पूर्ण रूप से भ्रमित किया जा चुका है।

जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग आत्म मुग्धता की स्थिति में स्थित हो चुका है और किसी भी तार्किक बात को सुनना उसे बिल्कुल गवारा नहीं है। यदि कोई भी संस्था हमारी कमियों की तरफ इशारा करती है तो जनता का यह बड़ा वर्ग उसे राष्ट्रीय अपमान मानने लगता है, व्यर्थ के तर्क देने लगता है, संस्था तथा उसकी रिपोर्ट पर संवाद करने वाले को कुतर्कं से बदनाम करने लगता है। यह वर्ग प्रशासनिक निष्ठुरता का इतना अभ्यस्त हो चुका है या फिर रिश्वत ले देकर कार्य संपन्न करवाने में माहिर हो गया है कि उसे सब कुछ सामान्य-सा लगने लगा है। यही कारण है कि राष्ट्रीय प्रसन्नता की सीढ़ी पर भारत पिछले कई सालों से दुनिया के देशों में निचले पायदानों पर ही खड़ा है। भारत आसानी से ऊपर की सीढ़ियों पर अपना स्थान बना सकता है बशर्ते जनता की आवाज देश के नेतृत्व पर दबाव बना सके। प्रशासनिक सुधार और राष्ट्रीय संसाधनों का जनहितार्थ उपयोग की मांग को राजनीति की अनर्गल बहसबाजी से दूर रख कर देश में व्यापक परिवर्तन होने चाहिये।

2023 की रिपोर्ट के अनुसार 195 देशों की दुनिया में प्रसन्नता सूचकांक में भारत निचले 126वें स्थान पर आता है जहां फिनलैंड शीर्ष पर और अफगानिस्तान पेंदे पर पाए गए हैं। हालांकि 66 लाख की आबादी वाले फिनलैंड की भारत जैसे विशाल देश से तुलना असंगत होगी परंतु फिर भी उस छोटे देश से काफी कुछ सीखा जा सकता है। इसी तरह से जो संस्था प्रसन्नता सूचकांक जारी करती है उसकी अपनी कमियां और सीमाएं होती हैं परंतु यदि वर्षों से भारत नीचे की सीढ़ियों पर ही रह रहा है तो देश को आत्ममूल्यांकन तो करना ही चाहिए।

पूंजीवाद अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है परंतु इसका लाभ यदि वृहद स्तर पर देश के अत्यंत गरीब तबके तक नहीं पहुंच पा रहा है तो यह एक निष्ठुर पूंजीवाद है जो समय के साथ स्वयं पूंजीवाद तथा देश के लिए हानिकारक होगा। समाजशास्त्र के विशेषज्ञों के अनुसार भारत को यदि प्रसन्नता सूचकांक की सीढ़ियां तेजी से तय करनी हैं तो दो क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना होगा। सर्वप्रथम तो प्राथमिक शिक्षा और आधारभूत कार्यकुशलता का प्रशिक्षण आवश्यक है। इस क्षेत्र में व्यापक कार्य की आवश्यकता होती है और यह सरकार के प्रथम कार्य का प्रथम भाग होना चाहिए। भारत में अधिक आबादी को दोष देने मात्र से काम नहीं चलने वाला है। आबादी यदि शिक्षित और कार्य कुशल है तो अनुशासन भी आयेगा और राष्ट्रीय उत्पादकता भी बढ़ेगी। भारत को इस बारे में शीघ्र ही निर्णय लेने होंगे वरना विश्व के शिखर पर पहुंचने का प्रयास मात्र नारों में सिमट कर रह जायेगा।

दूसरी प्रमुखता राष्ट्रव्यापी प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था होनी चाहिए। आज देश की 82 प्रतिशत सीएचसी में सर्जन नहीं है, 79 में शिशु एवम बालरोग विशेषज्ञ और 79 प्रतिशत में जनरल फिजिशियन का अभाव है। महिला और प्रसूति रोग विशेषज्ञ के बारे में तो सोचा ही नहीं जा सकता है। पीएचसी और सब सेंटर के तो हाल ही बुरे हैं। बीमारी और इलाज के खर्चे से बदहाल हुई ग्रामीण और कस्बों की आबादी से यदि हम विश्व शक्ति बनने की उम्मीद करते हैं तो यह एक दिवास्वप्न और राजनीतिक झांसे के अलावा कुछ नहीं होगा। भारत प्रकृति संपन्न देश है। हमें इसकी इस संपन्नता को पोषित करना होगा। सत्ता में कौन आता है कौन सत्ता से दूर जाता है इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि जन चेतना कितनी है। वोटर होने और अंधानुकरण करने में जो फर्क है उसे समझने की आवश्यकता है तभी भारत अपनी संभावनाओं को प्राप्त कर सकेगा वरना थोथे गाल बजते रहेंगे और नासमझ लोग तालियों की गड़गड़ाहट से आसमान में छेद करने का निरर्थक प्रयास करते रहेंगे। कोई भी राष्ट्र हो, स्वास्थ्य और शिक्षा एवम् कार्य कुशलता उसके विकास और उसकी प्रसन्नता के आधार होते हैं।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

करौली का 250 साल पुराना शिकारगंज महल जीर्ण-शीर्ण हालत में

करौली, (निसं)। करौली के शिकारगंज महल में 250 साल पहले कृत्रिम झरना और वातानुकूलित अंडरग्राउंड महल का होना इस बात की तस्दीक करता है कि रियासतकाल में करौली ज्यादा भव्य थी। लेकिन करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद आज शिकारगंज महल नशेबाजों का अड्डा बनता जा रहा है। वहीं टूटे पत्थर-जालियों के बीच जगह-जगह शराब की बोतलों के टुकड़े पड़े नजर आ रहे हैं। वहीं देखरेख के अभाव में खंड-खंड होता नजर आ रहा है।

करौली का शिकारगंज महल देखरेख के अभाव में खंड-खंड होता नजर आ रहा है।

- **करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद शिकारगंज महल नशेबाजों का अड्डा बनता जा रहा है**

करौली का ऐतिहासिक लाल पत्थरों से बना शिकारगंज महल सामरिक महत्व के साथ शिल्पकला का बेजोड़ नमूना है। जिसकी शिल्पकारी देसी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर सकती है, लेकिन देखरेख के अभाव में करौली की यह ऐतिहासिक धरोहर खंड-खंड हो रही है। महल के नक्काशीदार गुम्बद और जालियां धराशायी हो चुकी हैं भूलभुलैया और भूमिगत महल जर्जर हो गए हैं। वहीं चारों ओर गंदगी का साम्राज्य है। जिला मुख्यालय से मंडरायल जाने वाले रास्ते पर वॉल सिटी से करीब दो किलोमीटर दूर शिकारगंज महल बना हुआ है। इतिहासकार वेणुगोपाल शर्मा के मुताबिक इस महल का निर्माण करीब 250 साल पहले सामरिक दृष्टि से किया गया था। महाराजा हरबक्श पाल के समय में इस महल का काम शुरू हुआ था और करीब 30-40 साल बाद महाराजा प्रतापपाल के समय में यह महल बनकर तैयार हुआ। इतिहासकार वेणुगोपाल शर्मा के मुताबिक शिकारगंज महल को सामरिक दृष्टि से बनवाया गया था। माना जाता है कि करौली के राजमहलों से एक सुरंग शिकारगंज महल तक आती है, जो शिकारगंज के भूमिगत महल में खुलती। इसके साथ ही 4 मंजिला इस महल में दो मंजिलें भूमिगत हैं। जिनमें नक्काशीदार गुम्बदों पर खड़ी एक मंजिल में 500 व्यक्तियों की क्षमता का विशाल हॉल है। वहीं एक मंजिल पर वाटर फॉल का टैंक बना हुआ है। हालांकि अब इसकी दूसरी भूमिगत मंजिल तक जाना संभव नहीं है।

उन्होंने बताया कि महल परिसर में बने कुएं से शिकारगंज महल की दूसरी मंजिल तक पानी पहुंचाया जाता था। शिकारगंज महल अब पूरी तरह जीर्ण- शीर्ण हो गया है। शिकारगंज के मुख्य महल में लगीं नक्काशीदार जालियां तोड़ दी गई हैं। महल के बीच में बने कुण्ड की आकर्षक बाउण्ड्री टूट गई है। महल की ऊपरी मंजिल पर लगी बालकनी धराशायी हो गई है। भूमिगत महल को जाने वाला रास्ता भी पूरी तरह अवरुद्ध हो गया है। वहीं भूल-भुलैया वाला हिस्सा भी क्षतिग्रस्त हो गया है। जिसके चलते सामरिक महत्व और अद्भुत शिल्पकला वाला यह शिकारगंज महल अब किसी डरावनी हवेली की तरह नजर आता है। शिकारगंज महल के जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण के लिए साल 2016-17 में पर्यटन योजना के तहत राज्य निधि से 2 करोड़ 70 लाख की राशि स्वीकृत हुई थी। इसके बाद आगामी वर्षों में यहां महल की मरम्मत और सौंदर्यीकरण का काम करवाया गया था। लेकिन लगातार देखरेख नहीं होने की वजह से फिर से शिकारगंज महल जीर्ण-शीर्ण हो गया है। जिसके संरक्षण की दरकार है।

आसपास के लोगों ने बताया कि इसे नशेड़ियों ने शरणस्थली बना लिया है। इसी तरह आवारा जानवरों के प्रवेश की वजह से भी महल में चारों तरफ गंदगी का साम्राज्य नजर आ रहा है। करौली में 4-5 साल पहले शिकारगंज महल के साथ रणगमा ताल, अंजनी माता मंदिर और बैठा हनुमान मंदिर पर भी जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण के कार्य करवाए गए थे। वर्तमान में शिकारगंज को छोड़कर बाकी तीनों धरोहरों पर पर्यटकों की संख्या में इजाफा हुआ है, क्योंकि स्थानीय लोगों की ओर से इन तीनों धरोहरों की नियमित रुप से देखभाल की जाती है। बैठा हनुमान मंदिर पर रोजाना आने वाले भक्तों की मंडली साफ-सफाई, पेंट सहित अन्य कार्यों की देखरेख करती है। अंजनी माता मंदिर पर भी इसी तरह की व्यवस्था है। तो वहीं रणगमा ताल की देखरेख रणगमा क्षेत्र विकास समिति कर रही है। जिसके चलते इन ऐतिहासिक प्राकृतिक धरोहरों पर टूट-फूट होने पर तुरंत मरम्मत करवा दी जाती है। वहीं साफ-सफाई भी नियमित होती है। इसी तरह अगर शिकारगंज महल के लिए भी जिला प्रशासन स्थानीय लोगों को जोड़कर नियमित देखभाल के लिए समिति का गठन कर सकता है। जिससे धीरे-धीरे दरक रही इस ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित कर पर्यटन स्थल विकसित किया जा सके।

सांभर में इंडस्ट्रीज नहीं होने से रोजगार का संकट, हजारों लोग कर रहे पलायन

सांभरझील, (निसं)। फुलेरा विधानसभा क्षेत्र के सांभर उपखंड मुख्यालय पर इंडस्ट्रीज स्थापित करने व निजी नमक उत्पादन की परमीशन दिलवाकर सुलभ रोजगार उपलब्ध करवाने की दिशा में बीते 70 वर्षों में जितनी भी सरकारें आई उनकी ओर से अनदेखी ही की गई है। जानकारी में आया है कि रोजगार के लिए विगत दो दशक में 2000 से अधिक परिवार यानी करीब 10000 से अधिक लोग सांभर छोड़कर अन्यत्र पलायन कर चुके हैं।

- **दो दशक में 10000 से अधिक लोग कर चुके हैं पलायन**
- **पर्यटन नगरी होने के बवजूद मूलभूत सुविधाओं को तरस रहा है सांभर**

सांभर सहित आसपास के करीब 2000 से अधिक लोग जयपुर-अजमेर अथवा अन्य स्थानों पर अप-डाउन कर बमुश्किल परिवार चला रहे हैं। बताया जा रहा है कि मीठे पानी की कमी से सांभर में इंडस्ट्रीज नहीं लग पा रही है इसके लिए कोई विकल्प नहीं खोजा जा रहा है। जयपुर जिले में नमक उत्पादन के लिए राज्य सरकार की पाबंदी भी इसमें रोड़ा बनी हुई है। जबकि भारत सरकार का उपक्रम सांभर साल्ट लिमिटेड खुद नमक उत्पादन कर भारी मुनाफा कमा रहा है। यहां से करीब 30 किलोमीटर नागौर जिले के नावा में प्राइवेट लोगों को नमक उत्पादन की परमिशन है। गुढा, नांवा, जाप्तीनगर क्षेत्र में करीब 25000 से अधिक लोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस नमक उत्पादन के रोजगार से जुड़े हुए हैं। नमक संगठन के अध्यक्ष व नागरिक विकास समिति के कार्यकारी अध्यक्ष अनिल कुमार गट्टानी बताते हैं कि यदि सांभर में नमक उत्पादन की परमिशन होती तो हजारों लोगों को हर तरह का रोजगार उपलब्ध होता। यहां का व्यापारिक क्षेत्र गर्त में नहीं जाता।

सांभर में पलायन की जो स्थिति बनी है और लगातार जारी है उसके पीछे मोटा कारण रोजगार का ही अभाव है। सांभर के अस्तित्व व लोगों के पलायन को रोकने के लिए जरूरी है कि राज्य सरकार और भारत सरकार मिलकर जयपुर जिले में नमक उत्पादन की परमिशन के रास्ते खोले। गट्टानी ने बताया कि इसके लिए समय-समय पर हमारी ओर से सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाया गया लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। लोगों का कहना है कि सांभर के विकास के लिए क्षेत्रीय विधायकों की कमजोरी फुलेरा विधानसभा क्षेत्र के लिए दुर्भाग्य साबित हुई है। उद्योग धंधों के अभाव के कारण सैकड़ों गरीब परिवारों की महिलाएं वर्तमान में भी गुढा, नांवा, राजास आदि क्षेत्रों में नमक का काम करने के लिए भोर होते ही घर से निकल जाती है। इतना ही नहीं सांभर को पर्यटन नगरी का दर्जा तो मिला लेकिन पर्यटन जैसा यहां माहौल बनाने में जनप्रतिनिधियों और सामाजिक संस्थाओं की भूमिका भी शून्य ही रही। विभाग की वेबसाइट पर भी यहां के धार्मिक तीर्थ स्थलों, लवणीय झील में विचरण करते खूबसूरत पक्षियों की तस्वीरें, प्राचीन इमारतों के फोटो सांभर के इतिहास को भली-भांति से दर्शित तो करते हैं लेकिन धरातल पर सब कुछ उल्टा-पुल्टा है। सांभर से अजमेर व सांभर से सीकर के अलावा शाकंभरी माता मंदिर जाने के लिए राजस्थान रोडवेज की तरफ से बसें उपलब्ध नहीं है, एक दो बस के अलावा आने-जाने का कोई साधन नहीं है जो पूरी तरह से अपर्याप्त है। उपखंड मुख्यालय पर सफाई की व्यवस्था ऐसी कि बाहर से कोई देशी विदेशी आ जाए तो देखकर के सोचने पर मजबूर हो जाएगा कि क्या मैं वाकई में पर्यटन नगरी में आ गया हूं। इसके अलावा एजुकेशन में भी सांभर उपखंड मुख्यालय पर कॉलेज के बाद दूसरा कोई विकल्प नहीं है। रेल मार्ग से सांभर से जयपुर व जयपुर से सांभर के लिए कुछ ट्रेनों के ठहराव की सुविधा अभी तक नहीं हो पाना सैकड़ों मुसाफिरों के लिए दुखदाई बना हुआ है। भूमिगत विद्युत लाईन का कार्य पेंडिग है। सीवरेज लाइन के लिए कोई खाका तैयार नहीं किया गया है। अनदेखी के कारण एशिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट हाथ से निकल गया। यहां पर सड़कों की हालत खस्ता है। यहां के चुने हुए जनप्रतिनिधि अपनी भूमिका सही प्रकार से अदा नहीं कर रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 अप्रेल, 2024

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 4:42 तक, सिद्ध योग रात्रि 12:25 तक, तैतिल करण प्रातः 7:58 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

रवियोग रात्रि 4:42 से आरम्भ होगा। आज अगस्ता अस्त सांय 4:17 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:31 तक, शुभ 9:09 से 10:47 तक, चर 2:02 से 3:39 तक, लाभ-अमृत 3:39 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 6:54

मेष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

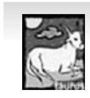

वृष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

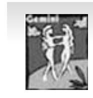

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है।

कन्या
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

तुला
व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिनचर्या में सुधार होगा।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

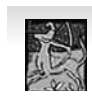

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

कुंभ
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।